UPANYASAM - HINDI (HSS-GENERAL).
(221)

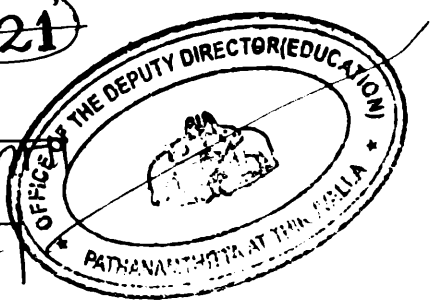

OFFICE OF THE DEPUTY DIRECTOR(EDUCATION) PATHANAMTHITTA AT THIRUVALLA

विषय : परंपरा और आधुनिकता के बीच की टकराहट।
348

परंपरा और आधुनिकता

परंपरा का साहित्य रूप में मतलब यह है कि जो पीढ़ियों से चली आ रही हो। भारत की परंपरा भी एक ऐतीहासिक मुल्य को दिखाता है, जो हमारी देश की संस्कृतियों से जुडे हुए है। पृथ्वी में जीवन की शुरुवात होने से लेकर आजतक जो भी संस्कार, संस्कृति, आचार-अनुष्ठान को हम निभाते है तो सभी हमारे परंपरा की हिस्सा है। घर में अगर कोई पुजा रहती है तो वो भी हमारी परंपरा का एक अंग।

पुराणों में वेद, उपनिषत् और कई ग्रंथों के द्वारा हमारे पुर्वज हमे कई ग्यान देना चाहते थे। उनकी समय से चलती आ रही या यह कहूँ की उनकी द्वारा बनायी गई कुछ अच्छे रीती-रिवाजों का पालन करना ही उसकी यानी परंपरा की असली मायने में सफलता है।

आधुनिकता का तात्पर्य यह है कि हमारे वेदों के साथ जब विज्ञान भी मिल जाता है तो वो आधुनिकता कहलाता है। केवल विज्ञान ही नहीं बल्कि हमारे समाज में आये हुए कई समाजिक परिवर्तन को भी आधुनिकता कहलाया जा सकता है। परिवर्तन कभी-कभी सही भी हो सकता है और गलत भी। मगर परिवर्तन को जिस इनसान लाता है, उसकी स्वभाव के अनुसार ही परिवर्तन को आधुनिकता की गुण पर तोला जा सकता है।

आज की पीढ़ी को हम अकसर आधुनिक कहकर संबोधित करते हैं। परंतु आधुनिक होना अच्छी बात भी है क्योंकि अगर समय और बदलते नये विज्ञान तकनिकि के साथ हम भी नहीं बदलेंगे तो दुनिया हमें पीछे छोड़ जायेगी। जब इनसान वक्त के साथ बदल नहीं सकता तो उसे, उसके ज्ञान से दुनिया को कोई फायदा नहीं होगा। बदलाव अच्छा तब ही साबित हो सकता है जब उसे सही ढंग से समाज के उपकार के लिए उपयुक्त की जाये।

OFFICE OF THE DEPUTY DIRECTOR (EDUCATION) PATHANAMTHITTA AT THIRUVALLA

परंपरा और आधुनिकता के बीच केवल एक ही अंतर है कि जो वक्त के साथ बदलता है उसे आधुनिकता कहते हैं। पुराने ज़माने से ही दुनिया भर में लोग भगवान की पूजा करते है, अलग-अलग तरीकों से मगर आधुनिकता का मतलब यही तो नहीं है कि आज कल हम भगवान न पूजते हैं। भगवान हमेशा एक ऐसा सच्चाई है जो समय के साथ नहीं बदल सकता, और जो चीज़ समय-बंधित ना हो उसे आधुनिकता नहीं कही जाती है।

विश्व की सबसे प्रसिद्ध चीज़ो में से एक है चीना में स्थित दीवार जो इनसान की परंपरागत विज्ञान का नतीजा है। आज भी उस दीवार को कोई नही तोड़ सकता क्यूँकि उसका निर्माण प्रायोगीत बुद्धि से आधीन परंपरागत ज्ञान से प्रेरित है। आधुनिकता अगर आयी है तो हर चीज़ों में उसकी झलक हम देख सकते हैं। "पुराने समय पर और आज का युग" ऐसा कहकर ही हम

आधुनिकता और परंपरा के बीच पहले दीवार खड़ा करवाते हैं। शास्त्र को बढ़ावा देना हमारा सबसे अच्छा उपयोग यह होगा कि बदलते वक्त के साथ काम-काज की कठिनता भी कम होती जा रही है। परंपरा का अनुशासन करना शायद आज लोग भूल रहे हैं। क्योंकि उन्हें आधुनिकता और परंपरा के बीच एक ऐसा दीवार खड़ा नज़र आता है।

बहुत वक्त पहले से ही हम हल्दी का उपयोग करते हैं। खाने में, दवायी में, कपड़ों को रंग देने में आदी के कार्यक्षेत्र में हमारा हल्दी का उपयोग करना सर्वसाधारण था। परंतु अगर यह प्रश्न उठता है कि हल्दी क्यूँ उपयुक्त है तो पहले हमारे पास इसका कोई उत्तर नहीं था। आज आधुनिकता के कारण हम इस सवाल का जवाब दे सकते हैं कि हल्दी को कई सारे दवायी गुण है जिससे हमारे शरीर को काफी फायदा हो सकता है। लोगों की नजरों में आज लाखों कारण होंगे आधुनिकता को पसंद करने में परंतु

परंपरा को भी उतना ही प्राधान्य देना चाहिए। परंपरा इनसान को सही मार्ग में चलाने की चाबी है। जब बात परंपरा और आधुनिकता के बीच आता है तब कहीं ना कहीं एक टकराहट जरूर होती। परंपरा को भूलना हमारे पूर्वजों की अच्छाई को भूलने के समान होता है और आधुनिकता को सर पर चढाने का मतलब यह होगा कि अपने आप को बरबादी की कगार में डाल देना।

आज देखता जाए तो कई सारे नए रोगों का पहचान कर पा रहे हैं। यह सारे रोग आने का कारण आधुनिकता के पीछे ही छुपा है। जैसे ही दुनिया भर में सारी चीजों का बदलाव होने लगा हमारे खाने और पीने का ढंग भी बदलता गया। अच्छे से पके हुए खाने से हमारी छोटी सी छोटी बिमारी भी ठीक हो जाते हैं। यह शास्त्र ने भी स्वीकारा है। पर आजकल लोग जल्दबाज़ी में अपनी आरोग्य स्थिती का ध्यान भी नहीं रख पाते है कि वो जल्द मिलनेवाले, आसानी से पकानेवाले खाने को निरभर करते हैं।

इसका नतीजा यह निकलेगा कि अच्छे खाना ना खाने के बाद हमारा तबियत और बिगड़ सकते है। जिस वजह से ऐसे नए-नए रोगों का पहचान होता है कि उनका इलाज ढूंढ पाना बड़ा मुश्किल साबित हो सकता है।

हम दूर बैठे हुए रिश्तेदार, दोस्त या करीबी तक अपनी बात टेलिफोन के द्वारा पहुँचाया जा सकता है, जो कि आधुनिकता एक कार्यक्षेत्र में से एक है। परंतु आज पढाई यह साक्ष्य करती है कि टेलिफोन के द्वारा जो विकिरण इनसान तक पहुँचाता है वो हमारे मानव जाती के लिए असुरक्षित है।

केवल दुरउपयोग के अलावा आधुनिकता का एक अच्छाई भी हम नजर अंदाज नही कर सकते। पहले इनसानों के बीच, रंग, जाती, पैसा आदि से संबंधित भेदभाव हुआ करता था। लेकिन आज उससे कहीं आगे पूर्ति बढ़ चुका है। सभी जगहों पर एकता ही नजर आता है ऐसा हम कहते है परंतु सच्चाई यह है कि कई पर आज भी भेदभाव किया जाता है। पर आधुनिकता का मूल रूप में से एक

OFFICE OF THE DEPUTY DIRECTOR(EDUCATION) PATHANAMTHITTA

यही है कि भेदभाव नब्बे प्रतिशत से ऊपर तक मिटा दिया गया है। सामाजिक संविधानों का सही मायने में उपकार मानवशशी को इसी प्रकार हो सकता है।

वैज्ञानिकों ने अपनी प्रतिभा को विश्व की उन्नती केलिए संभावना दी है जो आज के जमाने में काफी मददगार साबित हो रहा है। टकराहट चाहे परंपरा और आधुनिकता के बीच हो मगर देश की अंतसत्ता को बरकरार रखना हर एक नागरिक का कर्तव्य है जो उसे हर हाल में पूरा करना चाहिए। लोगों के बीच कि दूरियाँ मिटाने केलिए आधुनिकता उपकारी है।

जब टक्कर ऐसे लोगों के बीच हो जिनकी शक्तियाँ सोचने का ढंग एक जैसा हो तो वो टक्कर खतरनाक हो सकता है। ऐसी ही बात परंपरा और आधुनिकता के बीच है। लेकिन, जब आधुनिकता और परंपरा का उपयोग अच्छी नीयत से हो तो मिश्रण भी अच्छा रहेगा।

ज़माना चाहे कितना भी बदल जाये मगर हमारी संस्कृति का पालन करना हमारा कर्तव्य है और इसका सही मायने में गुण प्राप्त भी होगा। विश्व के सभी जीव-जंतु आज भी आधुनिकता से अंजान हैं मगर अनकेलिए उनकी जीने की वजह; आज भी वे अपनी परंपरा यानी रहने का ढंग नही बदल पाये और नाही कभी बदल पायेंगे।

महात्मागाँधीजी का एक प्रसिद्ध कहना था कि भारत की आत्मा गाँवों मे बसती है। इसका मूलभावों में से एक यह था कि परंपरा का जन्म गाँवो से ही होता है और वहीं है हमारी संस्कृति का केन्द्र जो भारत संस्कृति को विश्व संस्कृतियोंमें से सबसे अलग बनाता है। अंग्रेजों को हमारी संस्कृति बहुत पसंद आती है लेकिन एक नज़र हम अपने आप पर देखेंगे तो पता चलेगा की भारतीय खुद अपनी संस्कृति और परंपरा को छोड़कर अपनी अंग्रेजों के परंपरा यानी आधुनिकता के पीछे जाते हैं। कहने का मतलब यह कभी नहीं है कि अंग्रेजों की परंपरा बुरी है। इसका केवल एक ही मतलब

OFFICE OF THE DEPUTY DIRECTOR(EDUCATION)
PATHANAMTHITTA/ERUVALLA

है कि हमें अपनी परंपरा को बदलना देना चाहिए। कोई भी परंपरा बुरी नहीं होती। जबतक हमारी नज़रिया सही हो। टकराहट सिर्फ इस बात से होती है कि किसी और जगह की संस्कृति और परंपरा हमारेलिए आधुनिकता बन जाते हैं। जब हम उन्हें भी अपने अंदाज में अपनाना चाहेंगे तब ही परंपरा और आधुनिकता के बीच की टकराहट को हम बदल सकते हैं या मिटा सकते हैं।

एक देश की कामयाबी उसी में है कि उस देश की सारी संपत्ती का, संसाधनों का, लोगों का सहि मायने में उपयोग हो। मंजिल चाहे कितना ही कठिन क्यों ना हो पर उसे पाने के लिए जी तोड़ मेहनत हम सभी करते हैं। वैसे ही अपनी संस्कृति, परंपरा और आधुनिकता को हम सहि ढंग से इस्तेमाल करेंगे तो देश की तरक्की तो सौ प्रतिशत होगी और साथ ही साथ दुनियाकेनज़रो मे परंपरा और आधुनिकता के बीच का जो टकराहट है वो भी हम मिटा पायेंगे। तभी बनेगा विश्व एक ऐसा जगह जहाँ जन्नत भी धूटना टेक दें।